Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

सोर ठंडो लागे मुख में घालियां,
अग्नि मांहें घाल्यां हुवें तातो।
ज्यूं अविनीत ने सोर री ओपमां,
सोर ज्यूं अलगो पड़े जातो।।

सोरा में मुंह डालने पर ठंडा लगता है और अग्नि में डालने पर व गरम हो जाता है। अविनीत को सोरे की उपमा दी गई है। वह सोरे की तरह अलग-थलग पड़ जाता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 10 • 09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-12-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

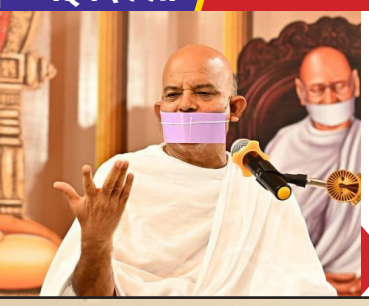

समय के मूल्य को समझ कर करें सम्यक् उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

ज्ञान के साथ आचरण का भी है महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

# प्रायश्चित और प्रतिक्रमण हैं शुद्धि के साधन : आचार्यश्री महाश्रमण

## मंगल भावना एवं दायित्व हस्तांतरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

## चतुर्दशी पर साधु संस्था को दसवेंआलियं को सहचर बनाने की मिली प्रेरणा

**जहांगीरपुरा।**
**30 नवम्बर, 2024**

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी सन् 2024 का सूरत का ऐतिहासिक चतुर्मास भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में संपन्न कर उपनगरों मे भ्रमण करते हुए महावीर संस्कार धाम, जहांगीरपुरा पधारे। यहां सूरत वासियों की ओर से पुण्य पुरुष का मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। इसी के साथ दायित्व हस्तांतरण कार्यक्रम के अंतर्गत मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति भुज ने पूज्य प्रवर की आगामी यात्रा का दायित्व भी ग्रहण किया।

महावीर के प्रतिनिधि ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि दसवेंआलियं एक आगम है, उसमें दस अध्ययन व दो चूलिकाएं भी हैं। दसवेंआलियं साधु संस्था के लिए काफी मार्गदर्शक शिक्षाप्रद आगम है। यह आगम बहुत ही महत्वपूर्ण और दैनंदिन जीवन से जुड़ा आगम हो जाता है। चारित्रात्माओं को इसका स्वाध्याय निरंतर करते रहना चाहिए। यह आगम हमारा सहचर, नैकट्य

वाला बन जाए।

मूल पाठ के साथ अर्थ भी ध्यान में रहना चाहिए। आवश्यक से भी हमारी शुद्धि हो सकती है। प्रतिक्रमण हमारा दोनों समय बढ़िया होता रहे। णमोत्थुणं व पंच पद वन्दना को मुहुर्त बाद भी लिया जा सकता है। पक्खी आदि में चार लोगस्स का पाठ पहले कर लें, मुहुर्त बाद पूरा दुबारा भी किया जा सकता है। प्रतिक्रमण का मतलब है, विभाव से स्वभाव में आ जाना। प्रायश्चित लेने वाले में सरलता और देने वाले में निष्पक्षता और गंभीरता होनी चाहिए। प्रायश्चित और प्रतिक्रमण शुद्धि के साधन हैं।

चतुर्दशी के अवसर चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि गोचरी करके आते ही चउवीसत्थव भी कर लेना चाहिए। तेरह नियम - पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति मुख्य हैं। हम अपनी मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहें, यह काम्य है। चारित्रात्माओं ने लेख पत्र का समुच्चारण किया।

मुमुक्षु केविन संघवी ने अपनी भावना श्री चरणों में अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने भुज में यथा संभवतया 7 फरवरी 2025 को मुमुक्षु केविन को जैन मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करवाई।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि आज महावीर संस्कार धाम आना हुआ है। चातुर्मास भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में हुआ और यह विदाई के क्षणों में महावीर धाम है। भगवान महावीर हमारे परम आराध्य है, हम सबके मन में बसे रहे। एक तरफ संपन्नता का प्रसंग है तो दूसरी ओर आरम्भ का समय है।

(शेष पेज 10 पर)

# भाषा को बनाएं जीवन की कला : आचार्यश्री महाश्रमण

**ओलपाड।**
**01 दिसम्बर, 2024**

सूरत शहर को पवित्र बना भुज मर्यादा महोत्सव के लिए गतिमान अणुव्रत यात्रा प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ ओलपाड पधारे। आगामी 1 जनवरी 2025 को नववर्ष का कार्यक्रम डोलीया में तथा 31 जनवरी से 16 फरवरी 2025 में भुज में मर्यादा महोत्सव का आयोजन संभावित है।

ज्योतिचरण ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे पास भाषा की लब्धि है। भाषा हमारे व्यवहार में बहुत काम आती है। अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाना है तो हम बोलकर या लिखकर भाषा का उपयोग करते हैं।

मनुष्य की भाषा काफी विकसित भाषा प्रतीत हो रही है। भाषाएं भी बहुत है। मनुष्य जगत में भाषा का बहुत विकास है। एक-एक भाषा में कितने कितने शब्द हैं। मनुष्य की भाषा समृद्ध भाषा है। भाषा को कैसे प्रस्तुत करें, कब बोलें, कब न बोलें? कहीं न बोलना अच्छा होता है तो कहीं बोलना अच्छा होता है। यह विवेक महत्वपूर्ण होता है। कितना बोलना इसका भी विवेक हो। मुखरता छोटा बनाने वाली होती है तो मौन ऊपर उठाने वाला होता है। नुपुर बोलता रहता है अतः उसका स्थान पैरों में व हार बोलता नहीं, अतः उसका स्थान गले में होता है। बोलना एक कला बन जाए। भाषा को कला बनाने का पहला सूत्र है- मित भाषिता। कम बोलो, अनावश्यक मत बोलो। वाणी के दो दोष होते हैं- बात को लंबा कर देना और बिना सार की बात करना। वाणी का गुण है- सीमित बोलना और सारपूर्ण बोलना। दूसरा सूत्र है- यथार्थ भाषिता।

बोले तो सच बोलें। झूठा आरोप न लगाएं, कटु भाषा न बोलें। पहले तोलें फिर बोलें, गुस्से में न बोलें।

(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

# जप-सामायिक को नहीं, विचारों को छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

**अड़ाजन-पाल।**
**28 नवम्बर, 2024**

अप्रमत साधना के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी का अड़ाजन पदार्पण हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए करूणा सागर ने फरमाया कि शास्त्र में तीन दंड बताए गए हैं- मनो दंड, वाक् दंड और काय दंड। तीन गुप्तियां भी बताई गई हैं - मनोगुप्ति, वाक् गुप्ति और काय गुप्ति। हमारे भीतर चित्त है और चेतना है, उसके मानो ये तीन कर्मचारी हैं- मन, वचन और काया। इन्हें तीन योग भी कहा गया है- मनोयोग, वचन योग और काय योग।

प्रवृत्ति योग हो जाती है। जब तक प्रवृत्तियां हैं तब तक कर्म का बंध भी होता रहता है। एक अवस्था साधु की वह भी आती है जब योग नहीं रहता वह अवस्था चौदहवें गुणस्थान में होती है। तेरह गुणस्थान में तो योग की चंचलता रहती है। चौदहवें गुणस्थान में कोई कर्म बंध नहीं होता।

मनोयोग अस्पष्ट होता है बाकि वचन योग और काय योग तो स्पष्ट दिखाई देते हैं। हाव भाव से मन को कुछ समझा जा सकता है। मन की प्रवृत्ति-अध्यवसाय कर्म बंध के जिम्मेदार हैं। चार इन्द्रियों तक के प्राणियों के मन नहीं होता इसलिए वे मरकर नरक में नहीं जाते हैं। ये इतना पाप नहीं कर सकते कि मरकर नरक में चले जाएं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अगर पाप भी करेगा तो ज्यादा से ज्यादा पहली नरक तक चला जाए। संज्ञी पंचेन्द्रिय मरकर सातों ही नरक में जा सकते हैं। तुदुल मच्छा एक छोटा से प्राणी है पर मन से इतना पाप कर लेता है कि सातवीं नरक में जाने के लायक बन जाता है।

असंज्ञी के ज्यादा पुण्य का बंध भी नहीं हो सकता है। ऊंचे देवलोक या मोक्ष में संज्ञी प्राणी ही जा सकते हैं। मन के द्वारा घोर पाप का बंध भी हो सकता है तो महानिर्जरा, महान पुण्य का बंध भी किया जा सकता है। इसलिए मन का होना एक विकास की भूमिका को प्राप्त करना होता है। मन एक समस्या भी है तो मन एक समाधान भी है। मन है तो प्राणी दुःख-सुख का अनुभव करता है। मन वाला एक प्रशस्त कार्य भी कर सकता है। हम सु-मन बनें, दुर्मन न बनें।

चंचलता मन की समस्या है। मन में कितने विचार आते रहते हैं। गृहस्थों के तो जप या सामायिक में कितने विचार आ जाते हैं। विचारों को छोड़ें, जप-सामायिक करना नहीं छोड़ें। मन की चंचलता को दूर करने का प्रयास करें। मन में राग-द्वेष व कषाय रूपी तरंगे उठती रहती है जिससे मन चंचल बना रहता है। चंचल बनाने वाले तत्वों को मंद करें।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष चल रहा है। प्रेक्षाध्यान एक प्रकार का उपाय है जिससे हम हमारी समस्याओं से निजात प्राप्त कर सकते हैं। पूज्य प्रवर ने कुछ समय प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय अध्यक्ष अरूण चावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

# समय के मूल्य को समझ कर करें सम्यक् उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

**अड़ाजन-पाल।**
**29 नवम्बर, 2024**

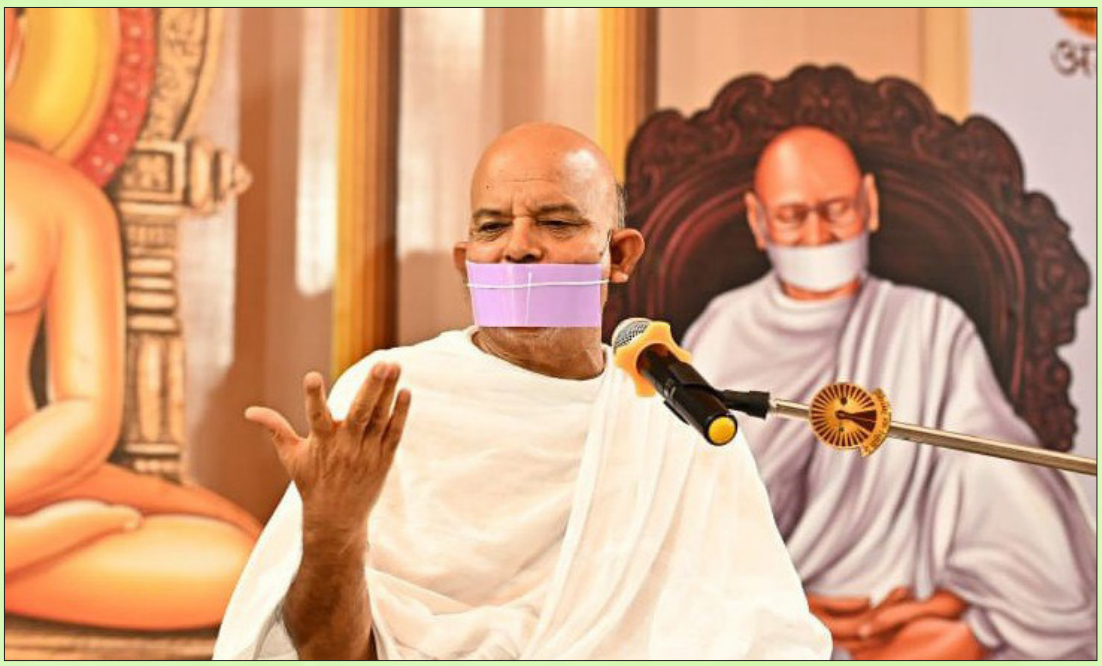

जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी का अड़ाजन पाल प्रवास का द्वितीय दिन। युगप्रधान आचार्य प्रवर ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि समय एक द्रव्य है। जैन दर्शन में षड् द्रव्यवाद और पंचास्तिकाय का वर्णन प्राप्त होता है। काल अलग है तो पंचास्तिकाय हो जाते हैं। काल को साथ में जोड़ दें तो षड् जीवनिकाय हो जाते हैं। हमारी यह सृष्टि छः द्रव्यों वाली, पांच अस्तिकायों वाली है। काल भी एक द्रव्य है भले वह पर्याय रूप में औपचारिक हो।

चार दृष्टियां हैं- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव। काल एक ऐसा द्रव्य है जो बीतता रहता है। समय के प्रवाह को रोका नहीं जा सकता है। जल प्रवाह को तो फिर भी रोका जा सकता है। घड़ी को तो बन्द किया जा सकता है पर काल को रोकना असंभव है। Time is money - समय धन है। समय का सदुपयोग करें। समय बिना पैसे मिलने वाली चीज है। सूरज, चांद या मेघ कभी पैसा नहीं मांगते। ये हमें मुफ्त में अवदान देने वाले हैं।

उपरोक्त भावार्थ को दर्शाते हुए आचार्य प्रवर ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित गीत की कुछ पंक्तियों का संगान करवाया :-

**दरखत री छांव और चंदे री चान्दनी,**
**सूरज री धूप लेण कुणसी**
**सीमा बणी,**
**सबरो समान अधिकार, संता रा**
**खुल्ला है बारणा।**
**कदई ल्यो कोई निहार, खुद ही है**
**द्वार पहरेदार।**
**संता रा खुला है बारणा।।**

ये चीजें व्यापक हैं, उदार हैं। इनका कोई सौदा नहीं होता। धर्मास्तिकाय कितना बड़ा तत्व है। वैसे ही अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय हैं। ये दुनिया के मानो आधारभूत तत्व हैं कि कोई भी सहयोग ले लो, किसी को मना नहीं करते। ऐसे ही पुद्गलास्तिकाय हैं। ये कितने उदार हैं।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्। जीवास्तिकाय दूसरे को सहयोग भले न दे पर एक-दूसरे को परस्पर सहयोग देते हैं। हम सामुदायिक जीवन में इसको एक आधारभूत सूत्र बना सकते हैं। हम समय का मूल्य समझें और इसका बढ़िया उपयोग करें। यह हमारे जीवन और आत्मा के लिए कल्याण की बात हो सकती है।

पूज्यवर के स्वागत में सुनील गुगलिया, मुक्ति भाई पारीख ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानाशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया कि ज्ञानशाला निर्माण का स्थल है, यहां संस्कारों का पुष्टिकरण होता है।

मुमुक्षु कल्प ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। यहां से संबद्ध साध्वी मेघविभाजी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। उपासक अशोक भाई सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। बाबुभाई पटेल ने अपनी पुस्तक 'वाणी-सरवाणी सदगुरू गमणी' पूज्यवर को समर्पित की। मुनि नमिकुमारजी, मुनि अमनकुमारजी, मुनि मुकेशकुमारजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# आचार्य भिक्षु हम सबके लिए हैं एक प्रेरणास्रोत

**दक्षिण मुंबई।**

मुनि कुलदीप कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ भव्य भिक्षु भक्ति कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु हम सबके लिए एक प्रेरणा हैं, एक आदर्श है।

आचार्य भिक्षु के जीवन प्रसंगों से सदाचार के मार्ग पर चलने का प्रयास करें। मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा आचार्य भिक्षु एक ऐसी शक्ति का नाम है जिसके स्मरण मात्र से ही सारे कार्य स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन, सभा, तेयुप ने सामूहिक मंगलाचरण किया। स्वागत भाषण फाउंडेशन अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ ने किया, फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया ने महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के बारे में एवं बोइसर में कॉलेज की विस्तृत जानकारी दी। इस भव्य भिक्षु भक्ति में संगायक कमल सेठिया ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर पूरे परिसर को भिक्षुमय बना दिया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर पधारे, जिनका परिचय देवेंद्र डागलिया ने दिया। दक्षिण मुंबई के बाल गायक सक्षम सिंघवी ने गीत की प्रस्तुति दी। राहुल नार्वेकर एवं कमल सेठिया का सम्मान किया गया।

मोटिवेशनल स्पीकर दीपेश मोटावत ने आचार्य भिक्षु के प्रति कविता प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने अपनी भावना प्रकट की।

आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक गणपतलाल डागलिया और नितेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम की सफलता में सह संयोजक अशोक धींग, रोनक धाकड़, पुष्पा कच्छारा का भी सराहनीय श्रम नियोजित हुआ। कुशल संचालन फाउंडेशन मंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया ने किया।

# आध्यात्मिक मंगल मिलन समारोह

**गीनपार्क, दिल्ली।**

दिल्ली से विहार कर सिवांची मालाणी की ओर विहार कर रही साध्वी अणिमाश्री जी का ग्रीन पार्क में विराजमान 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी से श्रद्धा गोयल निवास में आध्यात्मिक मंगल मिलन हुआ। वात्सल्य एवं विनय का अद्भुत नजारा देखकर अभ्यागत श्रावक भाव-विभोर हो गए। 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी ने अपने उद्बोधन में कहा तेरापंथ धर्म संघ एक महासागर है जिसमें श्रद्धा, भक्ति, समर्पण, वात्सल्य एवं विनय रूपी नदियों का संगम होता है। इस दुर्लभ समागम से तेरापंथ धर्मसंघ भव्यातिभव्य बन रहा है। आज ग्रीन पार्क में धर्मसंघ की दो धाराओं का संगम हुआ है। साध्वी अणिमाश्री जी ज्ञान की देदीप्यमान दीपशिखा है, श्रम की जलती मशाल है। मर्यादा व अनुशासन की जीवन्त कहानी है। उन्होंने अपने श्रम से दिल्ली में अच्छा नाम कमाया है। दिल्ली वासियों के दिल में स्थान बनाया है। उन्होंने आपने कर्तृत्व से संघ प्रभावना के महनीय कार्य किए हैं। अपनी सहवर्तिनी साध्वियों को भी अच्छा तैयार किया है। अब सिवांची मालाणी की ओर प्रस्थान कर रही हैं। तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो, धर्म संघ की प्रभावना करने वाली हो। नए इतिहास का सृजन करें, संघ एवं संघपति की गौरववृद्धि हो यही मेरी शुभाषंशा है।साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहा- आज हम शासनश्रीजी से आशीर्वाद लेने के लिए आए हैं। आप हमारे धर्मसंघ की वैदुष्यरत्ना साध्वीश्री जी हैं। आपने अपने नवोन्मेषी चिंतन, कार्यकुशलता एवं कर्मठता से गुरुत्रय की अपार कृपा प्राप्त की है। आपकी मस्तिष्कीय स्फुरणा ने ज्ञान मोतियों को आभामंडित किया है। आपकी सुघड़ लेखनी ने धर्मसंघ के साहित्य भंडार को समृद्ध बनाया है । आपकी प्रतिभा हम सबके लिए प्रणम्य है। उम्र के इस पड़ाव में भी आप सक्रिय बने हुए हैं। हम यहीं मंगलकामना करते है कि आप निरामय रहकर लंबे समय तक संघ की सेवा करते रहें। 'शासनश्री' साध्वी शीलप्रभाजी की सेवाभावना एवं गायन कला बेजोड़ है। 'शासनश्री' साध्वी शीलयशाजी, साध्वी समाधिप्रभाजी, साध्वी सूरजप्रभाजी, साध्वी ओजस्वीप्रभाजी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभाध्यक्ष सुशील पटावरी, महिला मंडल अध्यक्ष शिखा बैद, पुखराज सेठिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

# 110 दिन निराहार तप का प्रत्याख्यान

**मंड्या।**

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में मंड्या में 110 दिन निराहार तप का प्रत्याख्यान किया गया।

साध्वी संयमलताजी ने कहा– "तपस्या जीवन का श्रृंगार है, त्याग तप जीवन को उन्नत व तेजस्वी बनाते हैं। लम्बी-लम्बी तपस्याएं इस पदार्थवादी व भौतिकवादी युग के लिए चुनौती बन गई हैं। तपस्या से तपस्वी पुराने कर्मों को प्रकम्पित करता है। तपस्या अपनी आत्मा को उज्ज्वल व पवित्र बनाने का माध्यम है।

तपस्या के क्षेत्र में इतिहास में अमिट पदचिन्ह अंकित हैं लेकिन इस कलियुग में अनुराधा जैन ने 110 दिन का तप प्रत्याख्यान कर सबको रोमांचित कर दिया है।

तप के साथ अभिग्रह का प्रयोग भी विस्मृत करने वाला है। तप अनुमोदना के क्रम में अमित आच्छा ने मासखमण, अनिल जैन ने 11, संदीप आच्छा ने 8 एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने तेले के द्वारा तपस्वी की अनुमोदना में सहभागिता दी।

साध्वी रौनकप्रभा जी ने कहा- "तप अपने संकल्प व गुरुकृपा, गुरु ऊर्जा के साथ होता है। साध्वी संयमलताजी द्वारा रचित 'तपसी के तप से हिल जाता स्वर्गलोक में इन्द्रासन' गीत का संगान किया गया।

सुदर्शन आच्छा, संदीप आच्छा, पूर्व अध्यक्ष नरेन्द्र दक व मण्डल की बहनों ने अपने विचार रखे।

# व्यक्तित्व विकास कार्यशाला "दोनों हाथ एक साथ" का आयोजन

**सरदारपुरा।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला "दोनों हाथ एक साथ" का आयोजन तेरापंथ भवन अमर नगर में साध्वी जिनबालाजी के सान्निध्य में हुआ।

साध्वी जिनबालाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि दांपत्य जीवन में शांति पूर्ण जीवन जीएं। पति-पत्नी का रिश्ता बहुत ही नाजुक और मजबूत होता है जो परिवार का आधार है।

आपसी सहयोग और सम्मान से प्रेम पूर्वक और शांति पूर्वक रहा जा सकता है। साध्वी भव्यप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से बताया कि प्रेम और सद्भाव के साथ रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी प्राचीप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से घर को स्वर्ग बनाने के लिए प्रेरित किया। साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि परिवार में एक-दूसरे का विश्वास बनाए रखें।

अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने वक्तव्य में बताया कि दो हाथ साथ मिलेंगे तभी सब कुछ सही चलेगा।

मंच का कुशल संचालन पवन बुरड व अर्चना बुरड द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ द्वारा किया गया।

# एटीडीसी की पंचम वर्षगांठ

**राजाजीनगर।**

तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम की पंचम वर्षगांठ समारोह का अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से समायोजन हुआ। संस्कारक सतीश पोरवाड़, रनीत कोठारी एवं राजेश देरासरिया ने मंगल मंत्रोच्चार से विधि सम्पादित करवाई।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में एटीडीसी प्रायोजक परिवार का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए एटीडीसी का विस्तारीकरण, नया कलेक्शन सेंटर के शुभारंभ की ओर अग्रसर हेतु आह्वान करते हुए शुभकामनाएं सम्प्रेषित की।

मुख्य अतिथि युवा गौरव विमल कटारिया एवं अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा राजाजीनगर टीम हर एक कार्यक्रम को उत्साह पूर्ण से संपादित करने के लिए तत्पर रहती है, परिषद परिवार की सराहना करते हुए मंगलकामना सम्प्रेषित की। जैनम लक्ष्मीनारायणपुरम ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश सियाल, सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, अभूतपूर्व अध्यक्ष सुखलाल पितलिया, महिला मण्डल अध्यक्षा उषा चौधरी, एटीडीसी राष्ट्रीय सह-प्रभारी आलोक छाजेड़, ललितजी मेहर, शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी ने तेयुप के प्रति एटीडीसी की पंचम वर्षगांठ की शुभकामनाएं संप्रेषित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। राजेश देरासरिया ने एटीडीसी के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, जैनम लक्ष्मीनारायणपुरम ट्रस्ट परिवार, बेंगलुरु की विभिन्न तेयुप के पदाधिकारी, तेरापंथ सभा राजाजीनगर, महिला मंडल, तेयुप राजाजीनगर परामर्शक, प्रबंध मंडल एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया एवं आभार सह-मंत्री चेतन मांडोत ने व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

# सफल चातुर्मासिक प्रवास की सम्पन्नता पर आयोजित मंगल भावना समारोह

## इरोड

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में तपोभिनंदन, मंगल भावना और दीपावली स्नेह मिलन का संयुक्त कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण पिंकी वैदमुथा एवं पिंकी जीरावला द्वारा किया गया। प्रवक्ता उपासक हनुमानमल दुग्गड, उपासक प्रकाश पारख, महासभा उपाध्यक्ष नरेन्द्र नखत, सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, आदि अनेकों वक्ताओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मण्डल एवं तेयुप द्वारा गीतिका का संगान किया गया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों, कन्या मंडल और किशोर मण्डल द्वारा सामूहिक रूप से 'हमारा परिवार, हमारी जिम्मेदारी' पर आधारित रोचक एवं प्रेरणादायी नाटिका की प्रस्तुति की गई। मुनि रश्मि कुमार जी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि इरोड चातुर्मास गुरुकृपा से ही मिला है। सभी आध्यात्मिक जीवन जीने का प्रयास करते रहें और संघ सेवा, समर्पण भाव, जप, तप, ध्यान, सामायिक और स्वाध्याय में संलग्न रहें। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने चातुर्मास में हुए अनुष्ठानों, आध्यात्मिक कार्यक्रमों के बारे में और सम्पन्नता से संबंधित विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मण्डल अध्यक्षा पिंकी भंसाली ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दुलीचंद पारख ने किया। तपस्वियों का अभिनंदन, जैन विद्या के परीक्षार्थियों आदि का अभिनंदन सभा द्वारा मोमेंटो प्रदान कर किया गया।

## शाहदरा, दिल्ली

साध्वी संगीतश्री का मंगल भावना समारोह ओसवाल भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के द्वारा मंगल गीत से हुआ। साध्वीश्री ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमण की शक्ति और ऊर्जा से सफलतम शाहदरा चातुर्मास सम्पन्न कर विहार कर रहे हैं। शादहरा का चातुर्मास अपने आप में ऐतिहासिक रहा। त्याग तप की लहर चारों ओर सुवासित रही। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजेन्द्र की टीम, ओसवाल भवन अध्यक्ष आनंद की टीम, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज की टीम, युवक परिषद् अध्यक्ष राकेश की टीम, इन सबने पूरे चातुर्मास में अच्छा लाभ लिया। आपने जो चातुर्मास में सीखा वो संजोकर रखना। त्याग, तप, सामायिक बराबर करते रहना। गुरू की आराधना करते रहना व आगे बढ़ते रहना। मंगल भावना समारोह दो दिवस में मनाया गया। साध्वी शान्तिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी व साध्वी मुदिताश्रीजी ने सभी से क्षमायाचना करते हुए आगे बढने की मंगल कामना की। इसी क्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी ने कहा साध्वीश्री ने इस चातुर्मास में अनेकानेक कार्यक्रमों के द्वारा जन-जन में नव संस्कार का संचार किया। 9 मासखमण करवा कर आपने शाहदरा में इतिहास बना दिया। पदाधिकारियों ने विचारों की अभिव्यक्ति दी व मंगल भावना प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश भंसाली ने किया।

## गुवाहाटी

चातुर्मास की सम्पन्नता पर मंगल भावना समारोह को सम्बोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा- गुरुकृपा से गुवाहाटी का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है। चार महीने अध्यात्म का ठाठ लगा रहा। तप-त्याग से हमारा जीवन महान बनता है। चातुर्मास का समय आत्म जागरण का, स्वाध्याय का समय होता है। ज्ञान के अभाव में अनेक भ्रांतियां पैदा हो जाती हैं। ज्ञान प्राप्त होने के बाद उसका जितना मनन किया जाता है उतनी भीतर में परिपक्वता आती है। प्रत्येक श्रावक को अपनी जीवनचर्या में सामायिक साधना का अभ्यास करना चाहिए, जिससे श्रावकत्व की अनुपालना हो सके। हमारे जीवन में अध्यात्म की भावना पुष्ट बनी रहे, वैसी भावना करते रहें। प्रेरणा से जीवन में परिवर्तन आता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि चातुर्मास में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। कितने ही श्रावक-श्राविकाओं ने आध्यात्मिकता का पूरा लाभ उठाया। सभा-संस्थाओं ने दायित्व को निभाया। गुवाहाटी के श्रावकों में अच्छी श्रद्धा-भावना है। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा - नदी, हवा, बादल, पंछी की तरह संतजन भी चलते रहते हैं। यायावर बनकर धर्म का बोध देते हैं। साधु एवं श्रावक का जोड़ा होता है। साधु की साधना में श्रावक निमित्त बनता है तो श्रावक समाज को धर्म का प्रतिबोध साधु-साध्वी देते हैं। गुवाहाटी का श्रावक समाज कई दृष्टि से बड़ा जागरूक है। श्रावक समाज साधु- साध्वियों के प्रति श्रद्धाशील-भक्ति भावना से पूर्ण है। सभा की संपूर्ण टीम ने चातुर्मास के दायित्व को सजग रहकर निभाया। तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, टीपीएफ संस्थाओं ने धर्म प्रभावना का कार्य किया है। सभाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेयुप अध्यक्ष सतीश भादानी, महासभा उपाध्यक्ष विजय चोपड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष पंकज भूरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग बैद, एवं अनेकों वक्ताओं ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा मंगल भावना व्यक्त की। द्वि-दिवसीय मंगल भावना कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री राकेश जैन ने किया। चिकित्सा सेवा एवं गोचरी सेवा करने वालों का सम्मान किया गया।

## गांधीनगर, बैंगलोर

गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 के चातुर्मास की परिसम्पन्नता के अवसर पर मंगल भावना समारोह का आयोजन हुआ। साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए कहा कि गुरुदेव ने हमें आपका चातुर्मास प्रदान कर निहाल कर दिया। पूरा श्रावक समाज आपके प्रति कृतज्ञ है। तेरापंथ युवक परिषद की भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा, महिला मण्डल गांधीनगर, राजाजीनगर, ज्ञानशाला की बहनों ने गीतिका के माध्यम से साध्वी श्री के प्रति मंगल भावना प्रस्तुत की। कार्यक्रम में महासभा से प्रकाश लोढा, सभा पदाधिकारी, महिला मण्डल अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल, युवक परिषद अध्यक्ष विमल धारीवाल, ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील चोरड़िया, अणुव्रत समिति से महेंद्र दक, टी पी एफ से पुष्पराज चोपड़ा, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने साध्वी श्री की प्रति मंगल भावना प्रकट की। भावना कोठारी एवं प्रतीक्षा बागरेचा ने साध्वी श्री के साथ टॉक शो का आयोजन किया। इस अवसर पर गुरुदेव दर्शनार्थ संघ यात्रा के प्रायोजक पारसमल भंसाली परिवार का मोमेंटो के साथ सभा द्वारा अभिनंदन किया गया। संयोजक गौतम चंद मुथा एवं सह संयोजक दिनेश छाजेड़ तथा उनकी पूरी टीम द्वारा यात्रा की व्यवस्था में विशेष श्रम नियोजन हेतु इस अवसर पर सराहना की गई। मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## सिकन्दराबाद

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के चातुर्मास की सानन्द सम्पन्नता पर भाग्यनगर वासियों द्वारा मंगल भावना समारोह मनाया गया। तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में उपस्थित जन मेदिनी को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि हमें आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारा भाग्यनगर में चातुर्मासिक आध्यात्मिक प्रवास सफल रहा। अब हमारा प्रस्थान गुरु निर्देशानुसार, मुम्बई की ओर होने जा रहा है। भाग्यनगर का सम्पूर्ण श्रावक समाज श्रद्धा, समर्पण भावना से समृद्ध है। तेरापंथ का विनीत श्रावक समाज मिला यह भी हमारा सौभाग्य है। साध्वीश्री ने कहा- सिकन्दराबाद में आयोजित इस चातुर्मास में मुख्य दायित्व तेरापंथी सभा, सिकन्दराबाद का रहा है। सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। सम्पूर्ण टीम कार्यकारी है। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार आदि सभी संस्थाओं ने हर कार्यक्रम को उत्साह के साथ सम्पादित किया। समय, शक्ति और श्रम का सुन्दर समायोजन किया, सभी साधुवाद के पात्र हैं। इसी प्रकार सभी संस्थाएं संघ विकास के लिये अपनी सृजन चेतना का उपयोग करती रहे। गुरु इंगित की आराधना, संघ मर्यादा और अनुशासन की विशेष अनुपालना करें। यही हमारी आध्यात्मिक मंगल कामना है। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल गीत प्रस्तुत किया गया। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के चेयरमैन महेन्द्र भंडारी, तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, पूर्वाध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा कविता आच्छा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, T.P.F. अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, विहार सेवा प्रभारी- प्रेमसुख बैंगानी, राज कुमार बोकडिया, संपत नौलखा, T.P.F राष्ट्रीय सह मंत्री मोहित बैद, किशोर मंडल के संयोजक ऋषभ चिंडालिया, अन्य पदाधिकारी गण एवं श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वीश्री के चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए आगामी विहार के प्रति मंगल कामना की। कार्यक्रम का संचालन महासभा प्रतिनिधि तेरापंथी सभा के परामर्शक लक्ष्मीपत बैद ने किया।

## दक्षिण मुंबई

मुनि कुलदीप कुमार जी के नमस्कार महामंत्र से मंगल भावना कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। ज्ञानशाला की प्रक्षिक्षिका बहनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, कार्याध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, मुंबई ज्ञानशाला की संयोजिका राजश्री कच्छारा, महासभा से देवेंद्र डागलिया, अणुव्रत समिति से नरेंद्र मुनोत, टी पी एफ से नीरज मोटावत, आदि अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने मुनि श्री के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। महिला मंडल, युवक परिषद, सभा एवं सक्षम सिंघवी ने गीत द्वारा भावना व्यक्त की। मुनि कुलदीप कुमार जी ने चातुर्मास की सराहना करते हुए कहा कि यहाँ का स्थान साताकारी रहा। फाउंडेशन, सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि सभी कार्यकर्ताओं का अच्छा सहयोग रहा। सभी धर्म ध्यान करते रहे। मुनि मुकुल कुमारजी ने एक-एक कार्यकर्ता का नाम लेकर सभी का उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया ।

## भिवानी

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि देवेंद्र कुमार जी, तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन भिवानी में मंगल भावना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। मुनि देवेंद्र कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चातुर्मास में जो आगमवाणी आपने सुनी है यदि उसे आत्मसात कर लिया जाए तो सुख समाधि की प्राप्ति हो सकती है। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुदेव का जहां पर आशीर्वाद होता है वहां पर चातुर्मास सफलतम होता है। जैसे नदी का पानी सब को तृप्त करता है वैसे ही साधु भी सबको तृप्त करता है। मुनि आर्जव कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। उन्होंने कहा कि संतों के विहार के उपरांत भवन में ताला और अंदर में जाला न लगे ऐसा प्रयास होना चाहिए। मुनि जिज्ञासु कुमार जी ने छोटे-छोटे त्याग करने की प्रेरणा प्रदान की और बताया कि ध्यान करने से भीतर के रत्न भी मिल सकते है। मुनि वृंद के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते हुए जीवन विज्ञान योग ध्यान ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन गुप्ता, भिवानी के वरिष्ठ श्रावक सुरेंद्र जैन एडवोकेट, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सन्मति कुमार जैन, अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संयोजन प्रवक्ता उपासिका मधु जैन ने किया।

## संक्षिप्त खबर

# जैन हस्तकला प्रदर्शनी व प्रतियोगिता का आयोजन

**श्रीगंगानगर।** साध्वी प्रज्ञावती जी के सान्निध्य में जैन हस्तकला - प्रदर्शनी व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बबोधन में तेरापंथ धर्म संघ में कला के विकास पर विस्तार से बताते हुए 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी के जीवन से जुड़े हुए कला संस्मरणों का उल्लेख किया। साध्वी मयंकयशाजी ने कला की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए जीवन जीने की कला पर चर्चा की। प्रतियोगिता का आयोजन दो वर्गों में किया गया। जूनियर वर्ग के लिए नमस्कार महामंत्र व स्वस्तिक विषय रहा तथा सीनियर वर्ग के लिए चार गति, श्रमण महावीर व आचार्य तुलसी आदि विषय निर्धारित किए गए। प्रदर्शनी में मुख्य आकर्षण साध्वी रामकुमारी जी द्वारा निर्मित सूक्ष्माक्षर व कलम से लिख पन्ने, श्रीफल से बने प्याला, केतली आदि अनेक छोटे-बड़े पात्र और उपकरण रहे। श्रीगंगानगर में इस तरह का कार्यक्रम पहली बार आयोजित हुआ और इसे देखने के लिए लोगों का तांता शाम तक लग रहा। जैन संस्कार विधि से विमल कोटेचा व रोहित जैन द्वारा मंत्र उच्चारण करने के पश्चात प्रदर्शनी का उद्घाटन अजय बोथरा द्वारा किया गया। प्रदर्शनी को अद्भुत रूप देने में पंकज जैन, संदीप आंचलिया, सुरेंद्र जैन व रिया जैन आदि का विशेष योगदान रहा ।

# स्कूल में आयोजित सेवा कार्य

**राजराजेश्वरी नगर।** तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए केंगेरी स्थित गवर्नमेंट लोअर प्राइमरी स्कूल में हनुमानमल, संजय, मनोज बैद नोखा बेंगलुरु के सहयोग से टेबल, चेयर, अलमारी आदि आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद उपाध्यक्ष नरेश बांठिया ने सभी का स्वागत किया। सेवा कार्य प्रभारी सौरभ चोरड़िया ने बताया कि तेयुप आर आर नगर लगातार सरकारी स्कूलों में जाकर उनकी जरूरत के हिसाब से सहायता कर रही है। इसी क्रम में केंगेरी गवर्नमेंट स्कूल में टेबल, कुर्सी और अलमारी की आवश्यकता को प्रायोजक परिवार के सहयोग से उपलब्ध करवाया गया। प्रायोजक संजय बैद ने तेयुप द्वारा किए कार्य की सराहना करते हुए अपने विचार रखे। स्कूल प्राध्यापक ने तेयुप आर आर नगर का धन्यवाद ज्ञापन किया। स्कूल प्राध्यापक एवं तेयुप आर आर नगर ने संजय बैद का समान किया। इस कार्य में केंगेरी से पूनम दक का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर परिषद् से उपाध्यक्ष नरेश बांठिया, मंत्री सुपार्श पटावरी, सेवा कार्य प्रभारी सौरभ चोरड़िया, सह प्रभारी पंकज बैद ने अपने समय का विसर्जन कर सेवा कार्य में सहयोग किया। सह प्रभारी पंकज बैद ने बैद परिवार का आभार व्यक्त किया।

# रक्तदान शिविर का आयोजन

**उत्तर कोलकाता।** अभातेयुप के तत्वाधान में तेयुप उत्तर कोलकाता द्वारा अवीशी ट्राइडेंट में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से रक्तदान शिविर की शुरुआत की गई। इस शिविर में 43 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। इस अवसर पर तेयुप पदाधिकारी गण और कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे। पीपल्स ब्लड बैंक ने अपनी सेवा दी।

# आचार्यश्री तुलसी जन्मोत्सव पर विशेष छूट

**रायपुर।** तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा आचार्य श्री तुलसी के 111वें जन्म दिवस के अवसर पर थाइरोइड, एचबीएवनसी, लिपिड प्रोफाइल आदि का रियायती दरों पर 69 व्यक्तियों द्वारा लाभ लिया गया।

## संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
## जैन विधि-अमूल्य निधि

### नामकरण संस्कार

■ **साउथ कोलकाता।** लाडनूं निवासी-दुर्गापुर प्रवासी अशोक-अमराव देवी बोरड़ के सुपौत्र एवं बाहुबली-अनिशा बोरड़ के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक महेंद्र दुगड़ द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ।

### नूतन गृह प्रवेश

■ **पूर्वांचल-कोलकाता।** फतेहपुर शेखावटी निवासी-न्यूटाउन कोलकाता प्रवासी अनूप कोठारी के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

■ **विक्रोली।** आसींद निवासी विक्रोली प्रवासी शांतादेवी-लक्ष्मीलाल कांठेड के पुत्र-पुत्रवधु श्रेयांस-शुचिता कांठेड के नूतन गृहप्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश टुकलिया एवं मुकेश मादरेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** गंगाशहर निवासी दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी वैभव, ऋषभ, सौरभ पटवा (सुपुत्र अनिल-सुनीता पटवा) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व अशोक सिंघी ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

■ **बेंगलुरु।** सादुलपुर निवासी बेंगलुरु प्रवासी रोहित सुराणा, पुत्र बबीता एवं स्वर्गीय बीरेन्द्र सुराणा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक जितेन्द्र घोषल एवं अरविंद बैद ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

■ **हैदराबाद।** गंगाशहर निवासी, हैदराबाद प्रवासी दीपक चन्द संचेती के सुपुत्र रवीश - प्रेक्षा संचेती के नूतन निवास का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित लूणिया ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ द्वारा सम्पादित करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** बीकानेर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी कंवर लाल सेठिया के सुपुत्र धर्मेन्द्र सेठिया के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक सुनीत नाहटा एवं नवीन सेठिया ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **हैदराबाद।** सुजानगढ़ निवासी, हैदराबाद प्रवासी राजीव-लता बैद के पुत्र व पुत्रवधू वरुण प्रीति बैद के सिकंदराबाद स्थित नवीन प्रतिष्ठान मिश्री बुटीक का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। संस्कारक ललित लूनिया ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि परिसम्पन्न करवाई।

# ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर्स कोर्स का आयोजन

**चेन्नै।**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत दो दिवसीय दक्षिणांचल स्तरीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर्स कोर्स का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ भवन साहुकारपेट में हुआ। मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में कार्यशाला का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

मुनिश्री ने प्रशिक्षकों को जैन धर्म के सिद्धांतों के बारे में समझाया एवं इसे ज्ञानार्थियों को समझाने की प्रेरणा दी। सभी प्रशिक्षकों को ज्ञानशाला में ज्यादा से ज्यादा सेवा देने की प्रेरणा दी। मुनि हेमंत कुमार जी ने प्रशिक्षकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि ज्ञानार्थियों को आधुनिक तरीके से पढ़ाएं ताकि ज्ञानार्थी और इंटरेस्ट से पढ़ें। मुनिश्री ने कहा कि प्रशिक्षक पहले स्वयं अध्ययन करे ताकि ज्ञानार्थियों पर पढ़ाई का भार ना हो।

माधावरम में विराजित साध्वी गवेषणाश्री जी ठाणा- 4 ने प्रशिक्षकों को भिक्षु स्वामी के सिद्धांत एवं तेरापंथ के सिद्धांतों को समझने की तथा ज्ञानार्थियों को समझाने की प्रेरणा दी।

उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा ने प्रशिक्षकों को संबोधित करते हुए आचार्य भिक्षु के विचार, दर्शन और सिद्धांतों को समझने की प्रेरणा देते हुए दान, दया, अनुकंपा आदि विषयों पर समझाया एवं उच्चारण शुद्धि, पच्चीस बोल का बेसिक नॉलेज़ भी दिया।

ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक अनीता चोपड़ा, सह-संयोजक कविता रायसोनी एवं राकेश खटेड़ ने ज्ञानशालाओं के प्रति अपना भावना व्यक्त करते हुए 'कैसे हो ज्ञानार्थियों को उत्कृष्ट ज्ञान की प्राप्ति' इस विषय पर प्रशिक्षकों को विशेष प्रेरणा दी। अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत वक्तव्य में ज्ञानशाला प्रशिक्षकों के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना संप्रेषित करते हुए कार्यशाला के प्रति शुभकामना व्यक्त की। कार्यशाला के व्यवस्था पक्ष में मंत्री गजेंद्र खांटेड, ज्ञानशाला के प्रभारी राजेश सांड, सह-प्रभारी अनिल बोथरा, मनोज डूंगरवाल, हेमंत मालु, तरुण बेद, प्रणव रायसोनी, वसंता बाबेल, सुप्रिया सामसुखा आदि का पूर्ण सहयोग रहा। दक्षिणांचल स्तरीय इस दो दिवसीय कार्यशाला में 75 प्रशिक्षकों की उपस्थिति रही जिसमें चेन्नई के अतिरिक्त बंगलौर, तिरुवन्नामलाई, वालाजाबाद, कांचीपुरम, एचडी-कोटे, नंदनगुंज, गुड्डियातम आदि क्षेत्र से भी प्रशिक्षकों ने अपनी संभागी उपस्थित दर्ज करवाई।

# डायबिटिक प्रोफाइल चेकउप का आयोजन

**राजाजीनगर।** आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में विश्व मधुमेह दिवस पर रियायती दर पर डायबिटिक प्रोफाइल चेकउप का समायोजन किया गया, जिसमें 5 विभिन्न प्रकार की जांच जैसे फास्टिंग ब्लड शुगर, पोस्ट प्रेंडियल ब्लड शुगर एवं Hba1c टेस्ट का समावेश किया गया। कुल 28 लोगों ने इसका लाभ लिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

## संबोधि

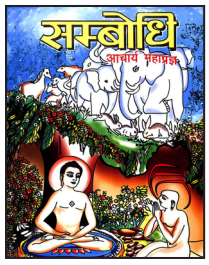


# गृहिधर्मचर्या

**-आचार्यश्री महाप्रज्ञ**

वे ही क्रियाकांड महत्त्वपूर्ण और उपादेय हैं जो व्यक्ति को आत्मा के निकट ले जाते हैं। जिनसे आत्मा दूर होती है वे कैसे उपादेय हो सकते हैं। योगसार में कहा है-'गृहस्थ हो या साधु, जो आत्मस्थ होता है, वही सिद्धि सुख को प्राप्त कर सकता है, ऐसा जिन भाषित है।' परमात्म प्रकाश में कहा है- 'संयम, शील, तप, दर्शन और ज्ञान सब आत्म शुद्धि में है। आत्म शुद्धि से ही कर्मक्षय होता है, इसलिए आत्म शुद्धि प्रधान है।'

**महावीर कहते हैं–गलत दिशा में चलकर कोई भी व्यक्ति अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। इससे तो वह वहीं पहुंचता है जहां पहुंचना नहीं चाहता। साध्य और साधन दोनों की शुद्धि अत्यंत अपेक्षित है।**

**१७. आत्मानः सदृशाः सन्ति, भेदो देहस्य दृश्यते।**
**आत्मनो ये जुगुप्सन्ते, महामोहं व्रजन्ति ते॥**

**स्वरूप की दृष्टि से सब आत्माएं समान हैं। उनमें केवल शरीर का अन्तर होता है। जो आत्माओं से घृणा करते हैं, वे महा–मोह में फंस जाते हैं।**

**१८. उच्चगोत्रो नीचगोत्रः, सामग्रया कथ्यते जनैः।**
**न हीनो नातिरिक्तश्च, क्वचिदात्मा प्रजायते॥**

**प्रशस्त सामग्री के प्राप्त होने से आत्मा उच्च गोत्र वाला और अप्रशस्त सामग्री के प्राप्त होने से वह नीचगोत्र वाला कहलाता है। वस्तुतः कोई भी आत्मा किसी भी आत्मा से न उच्च है और न नीच।**

**१९. प्रज्ञामदं नाम तपोमदञ्च, निर्णामयेद् गोत्रमदञ्च धीरः।**
**अन्यं जनं पश्यति बिम्बभूतं, न तस्य जातिः शरणं कुलं वा॥**

**धीर पुरुष वह होता है जो बुद्धि, तप और गोत्र के मद का उन्मूलन करे। जो दूसरे को प्रतिबिम्ब की भांति तुच्छ मानता है, उसके लिए जाति या कुल शरणभूत नहीं होते।**

जो धार्मिक हैं, किन्तु जिनके अज्ञान का आवरण हटा नहीं है, वे धार्मिक होते हुए भी वृत्तियों से धार्मिक नहीं होते। उनकी दृष्टि अभी बाहर स्थित है। वे बाह्य वातावरण से प्रभावित हैं तथा बाह्य वस्तुओं के संयोग-वियोग से महान् और क्षुद्र की कल्पनाएं करते हैं। धर्म का अभ्युदय होने पर बाह्य वस्तुओं का वैशिष्ट्य समाप्त हो जाता है। एक साथ दो चीजें नहीं रह सकती। (क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

### आचार्य भिक्षु युग

### साध्वीश्री हस्तूंजी (पीपाड) दीक्षा क्रमांक 45

साध्वी श्री बड़ी तपस्विनी हुई। आपने जो संलेखना तप किया वह इस प्रकार है- 2/1, 3/4, 4/4, 5/2, 6/2, 7/1, 8/3, 9/3, 11/1, 14/1, 15/1

साध्वीश्री ने 28 चातुर्मासों में दो माह एकान्तर तप किया। शीतकाल में 12 वर्षों तक रात्रि के समय एक पछेवडी में रहकर शीत सहन किया। आपने अन्तिम चतुर्मास में तप, जप व ऊनोदरी का विशेष प्रयोग किया। अन्त मे डेढ़ प्रहर के अनशन में निर्मलतम भावों में समाधि मरण को प्राप्त किया।

**– साभार: शासन समुद्र –**

## श्रमण महावीर

# नारी का बन्ध–विमोचन

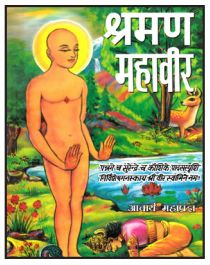


चंपा के नागरिकों ने जागकर देखा, उनकी नगरी शत्रु की सेना से घिर गई है। वे इस आकस्मिक आक्रमण से आश्चर्य-स्तब्ध हैं। 'यह किसकी सेना है? इसने किस हेतु से हमारी नगरी पर घेरा डाला है? क्या पहले कोई दूत आया था? क्या हमारे राज्य की सेना इस आकस्मिक आक्रमण के लिए तैयार है?' यत्र-तत्र ये प्रश्न पूछे जाने लगे। पर इनका समुचित उत्तर कौन दे?

राजा दधिवाहन वहां उपस्थित नहीं था। वह सुभद्र की सहायता के लिए गया हुआ था।

सुभद्र छोटा राजा था। वह चंपा की अधीनता में अपना शासन चलाता था। उसने अपनी रूपसी कन्या की सगाई अहिच्छत्रा के राजकुमार के साथ कर दी। भद्दिला के राजा मदनक को यह प्रिय नहीं लगा। वह उस कन्या को अपने अंतःपुर में लाना चाहता था। उसने सुभद्र को युद्ध की चुनौती दे दी। सुभद्र ने दधिवाहन की सहायता चाही। दधिवाहन अपनी सेना के साथ रणभूमि में पहुंच गया।

**वत्स देश का अधिपति शतानीक अंग देश को अपने राज्य में विलीन करने का स्वप्न संजोए बैठा था। एक बार अंग देश की सेना ने उसका स्वप्न भंग कर दिया था, इसका भी उसके मन में रोष था।**

शतानीक का सेनापति काकमुख धारिणी के स्वयंवर में असफल हो चुका था। दधिवाहन की सफलता पर उसे ईर्ष्या हो गई। धारिणी के प्रति उसके मन में अब भी आकर्षण था। शतानीक की स्वप्न-पूर्ति और काकमुख की प्रतिशोध-भावना को एक साथ अवसर मिला। काकमुख के संचालन में वत्स की सेना ने स्थल और जल-दोनों ओर से चंपा पर आक्रमण कर दिया। चंपा की सेना इस आकस्मिक आक्रमण से हतप्रभ हो गई। राजा उपस्थित नहीं था, वह युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। फिर भी उसने प्रतिरोध किया, किन्तु वत्स की सुसज्जित सेना का वह लम्बे समय तक सामना नहीं कर सकी। राजधानी के द्वार शत्रु सैनिकों के लिए खुल गए। काकमुख के प्रतिशोध की आग बुझी नहीं। उसने चंपा को लूटने की स्वीकृति दे दी। वत्स के सैनिक चंपा पर टूट पड़े।

उन्होंने किसी भी प्रासाद को शेष नहीं छोड़ा। वे राजप्रासाद में भी पहुंच गए। काकमुख ने रानी धारिणी और उसकी कन्या वसुमती का अपहरण कर लिया।

**सैनिक अपनी–अपनी बहादुरी बखानते लौट रहे थे। यह मानव जाति का दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास है कि मनुष्य दूसरे मनुष्यों को लूटकर प्रसन्नता का अनुभव करता है, दूसरों को अशांति की भट्टी में झोंककर शान्ति का अनुभव करता है।**

चंपा के नागरिकों ने क्या अपराध किया था? उन्होंने शतानीक या उसकी सेना का क्या बिगाड़ा था? उसका अपराध यही था कि वे विजेता देश के नागरिक नहीं थे, पराजित देश के नागरिक थे। शक्तिहीनता क्या कम अपराध है? शक्तिहीन निरपराध को हमेशा अपराधी के कठघरे में खड़ा होना पड़ा है। दधिवाहन की सेना शतानीक की सेना के सामने अल्पवीर्य थी। शतानीक की सेना पूरी सज्जा के साथ आक्रामक होकर आई थी। दधिवाहन की सेना युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। प्रमाद क्या कम अपराध है। जो अपने दायित्व के प्रति जागरूक नहीं होता, उसे सदा यातनाएं झेलनी पड़ी हैं।

विजेता का उन्माद शक्ति-प्रदर्शन किए बिना कब शान्त होता है? इस अ-हेतुक शक्ति-प्रर्शन में हजारों-हजारों नागरिकों को काल-रात्रि भुगतनी पड़ी। फिर राजप्रासाद कैसे बच पाता और कैसे बच पाता उसका अन्तःपुर? धारिणी और वसुमती को उसी मानवीय क्रूरता के अट्टहास का शिकार होना पड़ा।

काकमुख ने अपने पराक्रम का बखान इन शब्दों में किया, 'मैंने धन की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं सीधा राजप्रासाद में पहुंचा। वहां मेरा कुछ प्रतिरोध भी हुआ। पर मैं उसे चीरकर अन्तःपुर में पहुंच गया और महारानी को ले आया। मुझे पत्नी की आवश्यकता है। यह मेरी पत्नी होगी। एक कन्या को भी ले आया हूं। यदि धन आवश्यक होगा तो उसे बेच दूंगा।' (क्रमशः)

# धर्म है उत्कृष्ट मंगल

**-आचार्यश्री महाश्रमण**



## अदत्ताग्रहणम्
## अस्तेयम्

**सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान के दस प्रकार बतलाए गए हैं–**

**१. अनागत प्रत्याख्यान–** भविष्य में करणीय तप को पहले करना।. जैसे पर्युषण पर्व के समय आचार्य, तपस्वी, ग्लान आदि के वैयावृत्त्य में संलग्न रहने के कारण मैं प्रत्याख्यान-तपस्या नहीं कर सकूंगा इस प्रयोजन से अनागत तप वर्तमान में किया जाता है।

**२. अतिक्रान्त तप–** वर्तमान में करणीय तप नहीं किया जा सके, उसे भविष्य में करना।

**३. कोटिसहित प्रत्याख्यान–** एक प्रत्याख्यान का अन्तिम दिन और दूसरे प्रत्याख्यान का प्रारंभिक दिन हो, वह कोटिसहित प्रत्याख्यान है।

**४. नियंत्रित प्रत्याख्यान–** नीरोग या ग्लान अवस्था में भी 'मैं अमुक प्रकार का तप अमुक अमुक दिन अवश्य करूंगा' इस प्रकार का प्रत्याख्यान करना।

**५. साकार प्रत्याख्यान–** अपवाद सहित प्रत्याख्यान।

**६. अनाकार प्रत्याख्यान–** अपवाद रहित प्रत्याख्यान।

**७. परिमाणकृत प्रत्याख्यान–** दत्ति, कवल, भिक्षा, गृह रव्य आदि के परिमाणयुक्त प्रत्याख्यान।

**८. निरवशेष प्रत्याख्यान–** अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य का सम्पूर्ण परित्यागयुक्त प्रत्याख्यान।

**९. सकेत प्रत्याख्यान–** संकेत या चिह्न सहित किया जाने वाला प्रत्याख्यान। जैसे जब तक यह दीप नहीं बुझेगा या जब तक मैं घर नहीं जाऊंगा या जब तक पसीने को बूंदें नहीं सूखेंगी तब तक मैं कुछ भी न खाऊंगा और न पीऊंगा।

**१०. अध्वा प्रत्याख्यान–** मुहूर्त, पौरुषी आदि कालमान के आधार पर किया जाने वाला प्रत्याख्यान।

**देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान के सात प्रकार प्रज्ञप्त हैं–**

१. दिग्व्रत

२. उपभोग-परिभोग परिमाण

३. अनर्थदण्ड विरमण

४. सामायिक

५. देशावकासिक

६. पौषधोपवास

७. अतिथिसंविभाग।

अन्त में अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना। ये सभी गुण-व्रत और आध्यात्मिक प्रयोग परम सुख-प्राप्ति के हेतु बनते हैं।

**सुख दो प्रकार का होता है–** इन्द्रिय-सुख और अतीन्द्रिय सुख। इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाला सुख मनोज्ञ इन्द्रिय विषयों की उपलब्धि पर आधारित होता है। उनकी अनुपलब्धि से वह नहीं मिलता। उन सुखों में लिप्त होना दुःख का कारण बन जाता है। आगम में इस सच्चाई को इस भाषा में प्रकट किया गया है–

**जह किंपागफलाणं परिणामो न सुंदरो।**
**एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुंदरो।।**

जिस प्रकार किंपाक फल खाने में अच्छे लगते हैं, किंतु उनका परिणाम असुन्दर (प्राणान्त) रूप में होता है, उसी प्रकार भोग भोगकाल में सुखद लगते हैं, किन्तु परिणाम-काल में वे दुःखदायी हो जाते हैं। संस्कृत साहित्य में भी कहा गया है–

**इक्षुवद् विरसाः प्रान्ते सेविता स्युः परे रसाः।**
**सेवितस्तु रसः शान्तः सरसः स्यात परम्परम् ।।**

अन्य रस सेवित होने पर अन्त में इक्षु की भांति विरस बन जाते हैं। शान्त रस एक ऐसा रस है जो सेवित होने पर आगे से आगे सरस बनता जाता है। (क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

**समाचार प्रेषकों से निवेदन**

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।
5. समाचार भेजने वाला अपना नाम व मोबाइल नंबर समाचार के साथ अवश्य उल्लेख करें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
**अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्**

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

### आचार्य श्री जीतमलजी युग

### मुनिश्री दुलीचंदजी (पेटलावद) दीक्षा क्रमांक 197

मुनिश्री बड़े विनयी, यशस्वी और उत्कृष्ट श्रेणी के तपस्वी हुए। आपके तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/सैंकड़ों, 2/19, 3/14, 4/23, 5/27, 6/3, 7/2, 8/2, 9/1, 10/1 आपने तप में कुछ सवा तीन महीने एकान्तर और 14 महीने लगभग स्फुटकर बेले-बेले तप किया।

सं 1937 से 1941 तक पांच वर्ष लगातार बेले-बेले तप किया। सं 1942 से 1943 तक एक वर्ष लगभग तेले-तेले तप किया। सं 1943 से 1944 तक लगभग 15-16 महीने पंचोले-पंचोले तप किया। मुनिश्री ने अधिकांश तप चौविहार किया। पारणे में विगय भी प्रायः नहीं लेते थे। आपने जो बेले-बेले, तेले-तेले और पंचोले-पंचोले लगातार किये वे तालिका में दिये बेले, तेले और पंचोले उक्त तप के अतिरिक्त हैं।

**– साभार: शासन समुद्र –**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

## संक्षिप्त खबर

### बाल दिवस पर 24 घंटे का अखंड जाप

**चेन्नई।** तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल चेन्नई ने बाल दिवस के अवसर पर 24 घंटे के अखंड नवकार मंत्र जाप का आयोजन किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ किशोर मंडल एक्सिस की प्रेरणा से आयोजित यह जाप 'निर्जरा' पहल का हिस्सा था, जिसका उद्देश्य साधु-साध्वियों की आगामी विहार यात्रा के लिए मंगलकामना करना था। जाप 14 नवंबर को सुबह 6 बजे आरंभ होकर 15 नवंबर सुबह 6 बजे निर्विघ्न संपन्न हुआ। इस अवसर पर लगभग 730 प्रतिभागियों द्वारा 42,04,800 बार नवकार महामंत्र का जाप किया गया। आयोजन का केंद्र चेन्नई रहा, लेकिन इसमें संपूर्ण भारत, नेपाल और कैलिफ़ोर्निया (अमेरिका) के श्रद्धालुओं ने भी ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया। साहूकारपेट सभा भवन में मुनि हिमांशुकुमार जी एवं माधावरम में साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में जाप का आयोजन हुआ। तेरापंथ किशोर मंडल हिसार ने विशेष सहयोग के तहत पूरे 24 घंटे भाग लिया। कार्यक्रम की आयोजन समिति का नेतृत्व विशाल सिंघी, जैनम भंडारी, रौनक रायसोनी, सयंम रायसोनी और शुभम दांती ने किया। किशोर मंडल प्रभारी हरीश भंडारी और ऋषभ सुखलेचा ने कार्यक्रम की रूप रेखा एवं आयोजन में विशेष श्रम नियोजित किया। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष संदीप मुथा, मंत्री सुरेश तातेड़ सहित अनेक कार्यकताओं की भी सहभागिता रही।

### साधना कायोत्सर्ग कार्यशाला आयोजित

**नागपुर (महाराष्ट्र)।** प्रेक्षा कल्याण वर्ष के सुअवसर पर, प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा वाहिनी नागपुर द्वारा 'भगवान महावीर की साधना कायोत्सर्ग' कार्यशाला का आयोजन मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में शहर के तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

आचार्य तुलसी द्वारा रचित प्रेक्षा गीत का संगान महिला मंडल द्वारा किया गया। समवृत्ति श्वास प्रेक्षा का प्रयोग प्रेमलता सेठिया द्वारा करवाया गया। कायोत्सर्ग प्रयोग प्रेक्षा फाउंडेशन के सह संयोजक अमित जैन द्वारा करवाया गया। मुनि भरत कुमार जी ने, व्यक्ति के जीवन में कायोत्सर्ग की आवश्यकता के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यशाला का संचालन मीनू बोथरा ने किया। कार्यशाला में 75 सहभागियों की उपस्थिति रही।

### प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित

**गुवाहाटी।** प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षा वाहिनी द्वारा मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया। मुनि श्री ने ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान करवाया। लगभग 2 घंटे चली कार्यशाला में 100 से अधिक साधक गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन कान्ता बच्छावत द्वारा किया गया।

### मासिक गोष्ठी का आयोजन

**भीलवाड़ा, (राजस्थान)।** साध्वी कीर्तिलता जी के सानिध्य में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अवसर पर प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा वाहिनी द्वारा शहर के तेरापंथ भवन में मासिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में लगभग 100 सहभागियों ने भाग लिया। त्रिपदी वंदना तथा सामूहिक प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। साध्वी पूनमप्रभा जी ने ध्यान के विशेष प्रयोग करवाए। प्रेक्षा फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में जानकारी सह संवाहक विमला रांका ने दी।

# ज्ञानशाला है एक प्रयोगशाला

**शास्त्रीनगर, दिल्ली।**

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में शास्त्रीनगर तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगलाचरण के द्वारा कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य तुलसी का सपना था - आने वाली पीढ़ी में सद्संस्कार जागे। सपना साकार हुआ, ज्ञानशाला के निर्माण के द्वारा। ज्ञानशाला एक प्रयोगशाला है। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएं अपना समय लगाकर बच्चों में संस्कारों का वपन करें। आज ये बच्चें है, कल समाज के सदस्य बनने वाले है। बच्चें कोरे कागज की तरह होते हैं, इन के जीवन में हम जो लिखना चाहें वो लिख सकते हैं। बच्चे कच्ची टहनी होते हैं, जिधर मोड़ना चाहें उधर मोड़ सकते हैं, आवश्यकता है कि बच्चों पर ध्यान दिया जाए।

बच्चों के लिए साध्वीश्री ने कहा - बड़ों को प्रणाम करना, झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, अपने गुरू के नाम को याद रखना, आदि बातों का विशेष ध्यान रखें। इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी मुदिताश्रीजी, व साध्वी कार्तिकयशाजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति की। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका से साध्वीवृंद का स्वागत किया। सभा उपाध्यक्ष राजा कोठारी, ज्ञानशाला दिल्ली संयोजक मंयक बोथरा, सहसंयोजक मनीष पुगलिया और सरोज छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। ललिता बैंगानी ने आभार व्यक्त किया और संचालन ज्ञानशाला की बालिका - गीतिका ने किया।

# बारह व्रत धारकों का हुआ सम्मान

**विजयनगर।**

साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा- 4 के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा 'सम्मान व्रत चेतना का' कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन, विजयनगर में आयोजित किया गया।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ने भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित अनगार धर्म और अगार धर्म की व्याख्या करते हुए बताया कि श्रावकों के लिए पूर्ण संयमी बनना कठिन है, परन्तु आवश्यकताओं और उपभोग के सीमांकन द्वारा वे व्रती बन सकते हैं। व्रत चेतना को जागृत कर, व्रतों को समझकर, संकल्पों को स्वीकार किया जा सकता है।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से हुई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सबका स्वागत करते हुए साध्वी श्री द्वारा 12 व्रती बनाने हेतु किए गए अथक श्रम एवं प्रेरणा हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया ने शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी बारह व्रती श्रावक-श्राविकाओं का अभिनंदन जैन पट्ट एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा किया गया। शुभकरण पवन बैद परिवार के सभी सदस्यों ने बारह व्रत स्वीकार किए। इस कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा, पदाधिकारी गण, कार्यकारिणी सदस्य एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री संजय भटेवरा एवं सहमंत्री पवन बैद ने किया।

### चातुर्मास परिसंपन्नता पर किया विहार

**रायपुर।** श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर में चातुर्मास हेतु प्रवासरत आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी सहवर्ती मुनि नरेश कुमार ने राजा परदेसी आधारित प्रवचन पश्चात उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया एवं प्रवास स्थल से विहार किया। तेरापंथ समाज की सभी संघीय संस्थाओं ने मुनि वृंद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रवास काल में हुई अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना की। मुनि सुधाकर जी ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि साधु का जीवन तो स्व कल्याण के साथ पर कल्याण करने वाला होता है। मुनिश्री ने तेरापंथ समाज रायपुर से आह्वान किया कि आप सभी यूं ही धर्म प्रभावना करते हुए धर्म संघ के प्रति समर्पित रहते हुए अध्यात्म के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति करते रहें। मुनि नरेश कुमार जी ने भावनाएं व्यक्त की।

# भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

**बेंगलुरु।**

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु (तेयुप) द्वारा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी उदितयशा जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुई। साध्वी श्री ने कहा कि भिक्षु का नाम और उनके विचारों की गहराई को समझ पाना आसान नहीं है। उनका दर्शन तभी समझ में आ सकता है, जब हमारी भावना और चिंतन निर्मल हो। भिक्षु वह है जो अपनी बुद्धि और प्रज्ञा को साधना के शिखर तक पहुंचाते हैं। आचार्य भिक्षु ने अपनी साधना से आदर्श स्थापित किए और भगवान की वाणी के अनुसार अपने आचरण को शुद्ध किया। भिक्षु विचार दर्शन को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यही हमारे धर्म का आधार है। जब हमारी श्रद्धा सुदृढ़ होती है, तो आस्था का स्तंभ भी स्थिर होता है। भिक्षु के विचारों का अनुसरण करना हमें सच्ची निष्ठा के मार्ग पर ले जाता है। निष्ठा का जागरण तभी संभव है, जब श्रद्धा मजबूत हो, क्योंकि श्रद्धा ही सबसे बड़ा धन है। जिसके पास भगवान की आज्ञा के प्रति श्रद्धा नहीं है, वही सच्चे अर्थ में दरिद्र है। भिक्षु के दर्शन को समझकर और उस पर निष्ठा स्थिर करके ही हम सच्ची साधना के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने 'निर्जरा की अनुप्रेक्षा' करवाई। साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। बहन सीमा और खुशबू ने संवाद प्रस्तुत कर कार्यक्रम को रोचक बना दिया। विजय गीत का संगान मंत्री राकेश चोरड़िया ने किया, तत्पश्चात महासभा आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अभातेयुप से भिक्षु दर्शन कार्यशाला के राष्ट्रीय सह प्रभारी राकेश पोखरणा, शाखा प्रभारी अमित दक, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विमल धारीवाल, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा धर्मानुरागी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री राकेश चोरड़िया ने किया।

## प्रदर्शन, फैशन और व्यसन से रहें दूर

# तमिलनाडु स्तरीय संरक्षणम् कार्यशाला का हुआ आयोजन

**चेन्नई।**

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन एवं तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा 2 एवं साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ठाणा 4 के सान्निध्य में तमिलनाडु स्तरीय संरक्षणम् कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि हिमांशु कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से किया, तत्पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने संरक्षणम् लोगो का अनावरण किया। महिला मंडल की बहनों ने सुंदर स्वर लहरी के साथ मंगलाचरण की प्रस्तुति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य शशिकला नाहर ने किया। स्थानीय मंडल अध्यक्ष लता पारख ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा एवं राष्ट्रीय टीम के साथ सभी भाई- बहनों का स्वागत-अभिनन्दन कर मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा-2 एवं साध्वी गवेषणाश्री जी ठाणा- 4 के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा आपके मार्गदर्शन से संरक्षणम् कार्यशाला का भव्य आयोजन चेन्नई की धरा पर हो सका। तेरापंथ सभा चेन्नई अध्यक्ष अशोक खतंग ने सभी का स्वागत करते हुए महिला मंडल की टीम को कार्यक्रम के आयोजन के लिए बधाई दी।

चेन्नई से राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य माला कातरेला एवं दीपा पारख ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा का परिचय दिया। मुख्य वक्ता वीणा बैद का परिचय उपाध्यक्ष अलका खटेड ने तथा राष्ट्रीय प्रचार -प्रसार मंत्री सरिता बरलोटा का परिचय हेमलता नाहर ने दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने कहा - हमें संस्कारों की जड़ से जुडकर रहना है तभी हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर पाएंगे। हमारा मूल लक्ष्य है - संवर्धन, यानी हमें अपना विकास करते रहना है। गुरु इंगित शनिवार की सामायिक हम करेंगे तो हमारे बच्चे भी करेंगे। आज की युवापीढ़ी को धर्म से जोड़कर रखना बहुत जरूरी है तभी वो अपनी संस्कृति से जुड़कर रहेंगे। राष्ट्रीय प्रचार -प्रसार मंत्री सरिता बरलोटा ने कहा- संस्कार हमें अपनी धरोहर से जोड़कर रखता है, इसकी रक्षा करना हमारा दायित्व है। मुख्य वक्ता पूर्व महामंत्री वीणा बैद ने अपने वक्तव्य में कहा- हमें अपनी संस्कृति पर गौरव होना चाहिए। नारी घर-परिवार के साथ इस मंच को भी संभालती है, समाज में समय देती है पर यह बात पुरूष वर्ग बोले या गुरु बोले तो हमें खुशी होती है। संस्कार और संस्कृति की रक्षा हम नहीं करतें हैं वो हमारी रक्षा करते हैं।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि समूह के रूप में जो स्वीकार की जाती है उसे संस्कृति कहा जाता है और जो व्यक्ति के द्वारा स्वीकार किया जाता है वो संस्कार होता है। सैनिक देश की रक्षा करता है, बेटा परिवार की विरासत की रक्षा करता है। आज आधुनिकता के चक्कर में हम हमारी संस्कृति और संस्कारों से दूर हो रहें हैं। हमें संस्कारों के साथ जीवन को जीना है, खानपान में सुधार जरूरी है, सात्विक भोजन करना है, रात्रि भोजन का त्याग रखना है, तभी हम स्वस्थ रह पाएंगे। हमें प्रदर्शन, फैशन और व्यसन से दूर रहना है। मुनि हेमंत कुमार जी ने कहा- बहुत सारे संस्कार एक साथ मिल जाते हैं तो संस्कृति का रूप ले लेते हैं। नारी को हमेशा सम्मान मिलना चाहिए, हमारी बहनें आगे बढ रही हैं पर साथ में धर्म से भी जुडकर रहना है, तभी हमारी संस्कृति से हम जुड़े रहेंगे।

साध्वी गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पाश्चात्य संस्कृति सिखाती है खाओ-पीओ, मौज करो और होटल में रहो पर भारतीय संस्कृति सिखाती है जीओ तो ऐसे जीओ कि शांति से मर सको। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। मुख्य अतिथि इनकमटैक्स ओफिसर कोमल ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य अनिता बरडिया ने सुंदर तरीके से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चारों योजनाओं को समझाया और महिला मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी। चेन्नई तेरापंथ महिला मंडल ने संस्था, संस्कार और संस्कृति विषय पर बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी। प्रस्तुति के संचालन में कोषाध्यक्ष पूनम छाजेड, सहमंत्री वंदना पगारिया एवं प्रचार-प्रसार मंत्री रानी मांडोत का विशेष सहयोग रहा। चेन्नई तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा, टीपीएफ अध्यक्ष बबीता चोपड़ा, साहुकारपेट सभा भवन ट्रस्ट अध्यक्ष विमल चिपड, चेन्नई जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया एवं अनेक पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन मंत्री हेमलता नाहर और दित्तीय सत्र का संचालन उपाध्यक्ष रिमा सिंघवी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका रिमा सिंघवी, अलका खटेड, कंचन भंडारी, उषा धोका का सराहनीय सहयोग रहा।

धन्यवाद ज्ञापन सह मंत्री कंचन भंडारी एवं प्रचार प्रसार मंत्री उषा धोका ने दिया। चेन्नई महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष मंजु बोकडिया का महिला मंडल की बहनों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में राजेश खटेड (उत्सव इवेंट) का विशेष सहयोग रहा।

# ज़िद छोड़ो परिवार को जोड़ो

**रायपुर।**

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर ने एक विशेष कार्यशाला 'मेरा भाई मेरी भुजा - भाई हो तो ऐसा हो' का आयोजन किया। कार्यशाला में विशेष अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव आनंद पाटिल उपस्थित हुए। मुनि सुधाकर जी ने उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि भाई ही भाई की भुजा होता है। भाई से बड़ा न कोई मित्र होता है न कोई शत्रु। भाई चाहे तो भाई के जीवन को स्वर्ग या नरक बना सकता है। मुनिश्री ने रामायण व महाभारत पात्रों से इस विषय पर और अधिक प्रभावशाली तथ्य प्रस्तुत करते हुए भाई-भाई के रिश्तों को परिभाषित किया।

मुनिश्री ने आगे कहा कि रामायण में जहां सिंहासन के लिए समर्पण था जिसकी परिणति हुई भाईयों में आपसी प्रेम की प्रगाढ़ता के साथ कुल की यश कीर्ति में अभिवृद्धि। वहीं महाभारत में सिंहासन के लिए ममत्व था, जिसकी परिणति हुई महायुद्ध। मुनिश्री ने कहा- ज़िद छोड़ो परिवार को जोड़ो, भाई से विपत्ति बांटों न कि संपत्ति, भाई-भाई का रिश्ता दूध शक्कर जैसा होना चाहिए। स्वार्थ को छोड़ रिश्तों को जोड़ना चाहिए, झुकना पड़े तो झुको मगर परिवार को मत झुकने दो, तेरा मेरा छोड़ हमारा की भावना जागृत करें।

कार्यशाला के अंतर्गत समायोजित तेरापंथ महिला मंडल, रायपुर द्वारा आयोजित 'अपनी जोड़ी देवरानी जेठानी' पर भी मुनिश्री ने मार्गदर्शन दिया।

विशेष अतिथि आनंद पाटिल ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि आज स्वार्थवश व उचित मार्गदर्शन के साथ परवरिश नहीं मिलने के कारण भाई-भाई के रिश्तों में मधुरता की कमी हो रही। मुनि नरेशकुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

कार्यशाला के आयोजन में रोशन अंकित अनेकांत जैन व गणेश चंद धीरेन्द्र कुमार जैन का विशेष योगदान रहा।

कार्यशाला में मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, संचालन व आभार वीरेंद्र डागा के साथ स्वागत वक्तव्य पकंज बैद ने दिया। कार्यशाला में ऋषभ बोथरा, वीरेंद्र मरोठी, विकास बरलोटा, जयप्रकाश चोपड़ा, संजय सिंघी, अभय गोलछा, निकुंज साचला, वैभव बोथरा, संजय बोथरा ने विशेष सहयोग किया।

# तप अभिनंदन समारोह आयोजित

**हैदराबाद।**

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य मे तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद ने तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया। इस तप अभिनंदन समारोह के अंतर्गत साध्वीश्री के सान्निध्य मे आठ व आठ से ऊपर की तपस्या करने वाले तपस्वियों का सामूहिक तप अभिनंदन किया गया।

साध्वी शिवमालाजी ने सभी तपस्वियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया व उनके आध्यात्मिक जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। कार्यक्रम में उपस्थित समणी जयंतप्रज्ञा जी एवं समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि संघ हमारा प्राण है। संघपति के प्रति निष्ठा रखना एवं संघ के साथ जुड़े रहना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हम आभारी हैं कि हमें ऐसा भैक्षव शासन, तेरापंथ शासन और आचार्य श्री महाश्रमण जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। हमें हमेशा संघ की गरिमा को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम में कुल 62 तपस्वियों का सम्मान किया गया। जिनमें राजेश सेठिया, विनीता बोथरा एवं पिंकी बुच्चा ने मासखमण तथा प्रीति गांधी ने सिद्धि तप की तपस्या की। सभी को तप अभिनंदन पत्र भेंट करके सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत भिक्षु प्रज्ञा मंडली के सुंदर मंगलाचरण के साथ हुई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने कार्यक्रम मे पधारे सभी तपस्वियों तथा सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों व उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजक नवीन लुणिया तथा शुभम बैद ने तपस्या की महिमा बताते हुए सभी तपस्वियों के सम्मान कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम मे JITO हैदराबाद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष रोहित कोठारी, मंत्री ललित चोपड़ा, कोषाध्यक्ष विशाल आंचलिया अपनी पूरी टीम के साथ पधारे तथा साध्वीश्री से सफलतम कार्यकाल हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम मे सिकंदराबाद सभा, महिला मंडल, टीपीएफ तथा अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों के साथ अन्य गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

तेरापंथ सभा सिकंदराबाद द्वारा संवत्सरी महापर्व पर 8 वर्ष तथा उस से कम आयु के जिन बच्चों ने उपवास तथा पौषध आराधना की थी उन सभी का पारितोषिक के माध्यम से उत्साहवर्धन किया गया। अंत मे शुभम बैद ने आभार प्रकट किया तथा कार्यक्रम को सुनियोजित तरीके से संपादित करवाने के लिए अरिहंत गुजरानी के प्रति अनुमोदना की ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

# तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

**गंगाशहर।**

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह का आयोजन शांति निकेतन में किया गया।

कार्यक्रम में तप अनुमोदना करते हुए साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि तप के द्वारा आत्मा को कृष किया जाता है अर्थात आत्मा को कषायों से पतला किया जा सकता है।

तप का आशय त्याग करने से है। तपस्या में अशन, पान, खादिम, स्वादिम का त्याग किया जाता है। उनके साथ कषाय व इंद्रियों के विषयों का त्याग करना चाहिए। बाह्य तप की तुलना में आभ्यंतर तप अधिक महत्वपूर्ण है, जो कि मोक्ष तक पहुंचाने वाला है। अहंकार का नाश करने के लिए विनय का, रसनेन्द्रिय पर नियंत्रण के लिए विगय वर्जन या रस त्याग का अभ्यास करें। इंद्रियों पर विजय के लिए ध्यान व कायोत्सर्ग का प्रयोग करें।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा की तपस्या के द्वारा व्यक्ति व आत्मा का तेज बढ़ता है। जीवन की कालिमा को धोया जा सकता है। गौतम स्वामी द्वारा पूछने पर भगवान महावीर ने कहा की तपस्या से कर्मों का शोधन होता है। कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा का पहला प्रकार अनशन है।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ युवक परिषद मंत्री भरत गोलछा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी व तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने अपने उद्गार व्यक्त किये। समारोह में आठ व आठ से अधिक तपस्या करने वाले 79 तपस्वियों का सम्मान किया गया।

अमरचंद सोनी, नवरतन बोथरा, मांगीलाल लुणिया, शांतिलाल पुगलिया, संजू लालाणी, मंजू आंचलिया, देवेंद्र डागा, भरत गोलछा, विनीत बोथरा, लिखमीचंद मालू, जीवराज श्यासुखा, हड़मान मल सेठिया, मदनलाल बोथरा, कन्हैयालाल बोथरा ने तपस्वियों को अभिनंदन पत्र व साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने किया

# तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का हुआ गठन

**मंड्या।**

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में दक्षिणांचल टी.पी.एफ. अध्यक्ष, मंत्री व उपाध्यक्ष क्रमशः विक्रम कोठारी, भरत भंसाली व राजेश कोठारी ने आकर्षक गतिविधियों के माध्यम से टीपीएफ के गठन की सुंदर भूमिका का निर्माण किया। साध्वी संयमलता जी ने कहा- टीपीएफ तेरापंथ धर्मसंघ की एक ऐसी सशक्त संस्था है जो एक मंच से जुड़कर देश-विदेश के किसी भी कोने में रहते हुए संपर्क के माध्यम तथा परामर्श से जुड़कर आर्थिक, सामाजिक आदि सभी समस्याओं का समाधान देती है। देशभर के लगभग हजार प्रोफेशनल्स एक मंच से जुड़कर आध्यात्मिक विकास के साथ बौद्धिक विकास की ओर गतिशील हैं। मंड्या के प्राफेशनल्स भी इस संस्था से जुड़कर अपने विकास को नया आयाम प्रदान कर सकेंगे।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने बुद्धिजीवियों का ऐसा मंच तैयार किया जिसके फायदे तेरापंथ धर्मसंघ का हर सदस्य उठा सकता है, अपने संपर्क को विस्तार व कार्यों को गति प्रदान कर सकता है। अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने टीपीएफ की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। साथ ही मंड्या के प्रोफेशनल्स की मानसिकता तैयार होने से टीपीएफ का गठन कर दिया। सोनाली खींवेसरा ने विचार व्यक्त किये। राजेश कोठारी व भरत भंसाली ने सबको उत्साहित किया।

बैंगलुरू से समागत गायक ललित जैन ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सभा के पूर्व अध्यक्ष नरेन्द्र दक, उपाध्यक्ष किशनलाल आच्छा एवं सदस्य, महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष कमलेश गोखरू एवं सदस्य, कन्या मंडल के सदस्यों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

## पृष्ठ 1 का शेष

**प्रायश्चित और प्रतिक्रमण हैं...**

सूरत समाज में धर्माराधना बढ़ती रहे। सद्भावना, नैतिकता के गुणों से समाज संस्कारवान बनता रहे।

पूज्यवर के स्वागत में महावीर संस्कार धाम ट्रस्ट से बाबूलाल मांडोत एवं रमेशकुमार बोल्या ने अपने विचार व्यक्त किए।

सूरत चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा ने आचार्य प्रवर के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

भुज मर्यादा महोत्सव समिति के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी ने अपने विचार रखे। दायित्व हस्तांतरण कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा सहित पदाधिकारियों ने भुज मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति 2025 के पदाधिकारियों को जैन ध्वज सौंप कर दायित्व का हस्तांतरण किया। गांधीधाम प्रवास का लोगो भी इस अवसर पर गुरुचरणों में लोकार्पित किया गया। गांधीधाम से बाबूलाल सिंघवी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

---

**भाषा को बनाएं जीवन...**

गुस्सा करना एक प्रकार की हार है। शान्ति, क्षमा उपहार है। खुद झुकें, फिर दूसरों को झुकाएं, यह सरल मनोविज्ञान है। हम बड़ों के प्रति नम्रता रखेगें तो बड़े भी हमारे प्रति वत्सलता रखेंगे। नम्रता से आदमी बड़ा बन सकता है। हमारे बोलने में मित भाषिता, यथार्थता, अकटु भाषिता होती है तो हमारा बोलना कलापूर्ण होता है।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर के स्वागत में गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री मुकेश पटेल, ओलपाड समाज से भेरूलाल दक, अशोक दक, मुकेश दक, महिला मंडल, ओसवाल साजनान संघ अध्यक्ष बाबूलाल मेहता, विधि मुकेश शाह, क्रिनव बोल्या ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहनों ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# बोलती किताब

## निर्वाण का मार्ग

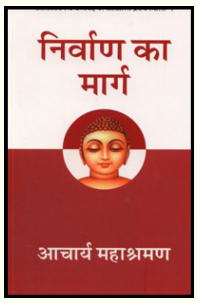


मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ है ,मन उनका प्रधान है ,वे मन से ही उत्पन्न होती हैं। यदि कोई दुषित मन से वचन बोलता हे या काम करता है तो दुःख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है जिस प्रकार चक्का गाड़ी खीचने वाले बैलों के पैर का।

आदमी कोई भी गलत काम करता हैं तो आमतौर से पहले मन में गलत भावना आती है, बाद मे गलत काम करता है। झूठ बोलेगा तो पहले मन में कोई आवेग आएगा, कोई गलत भाव आएगा, फिर वह झूठ बोलेगा। इसका मतलब है कि मन भूमिका है,आधार है। मन खराब है तो वचन भी खराब हो सकता है।

जहां प्रतिक्रिया ज्यादा होती है, वंहा संबंध कटू बन जाते हैं और जहां एक दूसरे को सहन किया जाता है, वहां संबंध अच्छे बन जाते हैं। भले ही साधु संस्था हो या गृहस्थ समुद्राय। यदि प्रतिक्रिया से बचने का अभ्यास हो तो संबंध भी अच्छे रहते हैं और जीवन व्यवहार में शांति भी बनी रहती हैं।

दो मार्ग हमारे सामने हैं.एक प्रमाद का मार्ग, दुसरा अप्रमाद का मार्ग। आदमी चाहे तो अप्रमाद के मार्ग में आगे बढ़ सकता है। परन्तु कौनसा मार्ग आदमी को कहा ले जाने वाला है इस पर ध्यान देना चाहिए। मार्ग का चुनाव करना बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। बिना सोचे विचारे कोई रास्ता ले लिया जाता है तो पथिक का कितना नुकसान हो सकता हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
**आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती**
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

# सॉफ्ट स्किल्स व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

**विजयनगर।**

साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर, तेरापंथ किशोर मंडल एपिसोड विजयनगर द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला सॉफ्ट स्किल्स का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात साध्वी आस्थाप्रभा जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने दिया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने समय नियोजन एवं ब्रह्म मुहूर्त में स्वाध्याय एवं पढ़ाई का महत्व बताया। साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने कहा कि हमारे प्रोडक्टिविटी के प्रेरणा स्रोत हमारे गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी हैं। हमें उनसे एफिशिएंसी की प्रेरणा लेनी चाहिए। किशोर मंडल द्वारा आयोजित कार्यक्रम के मुख्य वक्ता और मोटिवेशनल ट्रेनर मुकेश भंडारी ने रचनात्मक एवं संवाद परक रूप से कार्यशाला को प्रतिभागियों के लिए सहज बनाया। इस कार्यशाला में अभातेयुप के CPS के राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, ज्ञानशाला संयोजिका ममता मांडोत, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की

# भय को जीत अभय बनने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

**अमरोली।**
**26 नवम्बर, 2024**

अहिंसा के अग्रदूत अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमरोली में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि जिनेश्वरों को नमस्कार है, जिन्होंने भय को जीत लिया है। प्राणी के भीतर भय एक संज्ञा होती है। सामान्य प्राणियों में चार संज्ञाएं - आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञाएं होती है। भय भी एक वृत्ति है।

मूलतः भय आदमी को दुःख का लगता है। अनेक कारणों से व्यक्ति डर जाता है। अनेक भय हमारे भीतर हो सकते है। हम भय को जीतें, अभय बनें। न डरना न डराना, डरना कमजोरी है तो डराना हिंसा का एक अंग हो सकता है।

आज संविधान दिवस है। 26 नवम्बर को भारत संविधान पारित हुआ था। आगे 26 जनवरी को लागू हुआ था। 75 वर्ष बीत गये। संविधान भी त्राण देने वाला बन सकता है। संविधान का ही प्रभाव है कि एक सामान्य घर में पैदा हुआ व्यक्ति राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बन सकता है। हमारे देश में लोकतांत्रिक प्रणाली है। नियम, व्यवस्था, कानून बड़े से बड़े और छोटे से छोटे सब व्यक्तियों पर लागू होता है।

न्यायपालिका का भी कितना महत्व है। इसका अपना अंकुश है। नियम बनाने वाले का पालन कराने वाले और पालन करने वाले का भी महत्व है। आज हमारा देश संविधान के अनुसार चल रहा है। जनता भी एक शक्ति है। सरकार, राजनीति भी देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। नियम का उल्लंघन करेंगे तो दंड देना न्यायपालिका का कार्य है। दंड का भय आदमी को सन्मार्ग पर चलाने वाला सिद्ध हो सकता है।

हमारे देश भारत में कितने महापुरुष हुए हैं। देश को जहां भौतिक विकास चाहिए उसके साथ आर्थिक विकास भी चाहिए, साथ में देश में नैतिकता और आध्यात्मिकता भी रहे। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन शुरु किया था। अणुव्रत मानव को अच्छा बनाने वाला आन्दोलन है। आज यहां विद्यालय में आना हुआ है। यहां भी विद्यार्थियों में जीवन विज्ञान के संस्कार रहें। विद्यार्थियों में ज्ञान भी चाहिए साथ में अच्छा चरित्र भी जीवन में होना चाहिए। अच्छा ज्ञान से हम भय से बच सकते हैं और अच्छाईयों का विकास हो सकता है। पूज्यवर के स्वागत में कैलाश माण्डोत, देवेन्द्र माण्डोत, ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय ज्ञानशाला व कन्या मंडल की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

# सन्मार्ग पर चलना है आत्मा के लिए हितकर : आचार्यश्री महाश्रमण

**कतारगाम।**
**27 नवम्बर, 2024**

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी अमरोली से विहार कर कतारगाम पधारे। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि धार्मिक जगत या दार्शनिक जगत में आत्मवाद एक सिद्धान्त है। जैन दर्शन में आत्मा पर काफी वर्णन प्राप्त होता है। आत्मा शाश्वत है। आत्मा थी, आत्मा है और आत्मा हमेशा रहेगी। आत्मा पुनर्जन्म लेती है, अतः पुनर्जन्म है तो पूर्वजन्म भी होता है।

आत्माएं कभी पैदा नहीं हुई। अनादि अनन्त काल से आत्माएं हैं। जीव सदा हैं, सदा थे और सदा रहेंगे। आस्तिक विचारधारा में पुनर्जन्म को मान्यता प्राप्त है। मृत्यु और जन्म, इन दो स्थितियों में बीते जीवन पर पर्दा आ जाता है। कोई कोई मनुष्य ऐसे भी हो सकते हैं कि उनका वह पर्दा उठ जाता है, उन्हें पूर्वजन्म दिखने लग सकता है। हमारी विस्मृति का पर्दा हटता है तो जाति स्मृति ज्ञान हो सकता है।

आत्मा हमारे कषाय के कारण पुनर्जन्म लेती है। ये चार कषाय पुनर्जन्म की जड़ों को सिंचन देने वाले होते हैं। कई भव्य आत्माएं साधना के द्वारा इन जड़ों को उखाड़ देती हैं और वे मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। पुनर्जन्म है यह मानकर जीवन जीना चाहिए।

पुनर्जन्म के साथ कर्मवाद का सिद्धान्त भी जुड़ा हुआ है। कर्म है तब पुनर्जन्म की बात होती है। पिछले कृत कर्म के कारण ही सुख-दुःख मिलता है।

पिछले जन्मों के अनेक प्रसंग हमारे ग्रन्थों में आते हैं। भगवान महावीर के मुख्य 27 जन्मों का विवरण हमें मिलता है। यदि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के संबंध में संदेह हो तो एक सुन्दर मार्गदर्शन दिया गया कि बुरे काम मत करो, अच्छे काम करो। अच्छे काम किए हों और यह मान लिया जाए कि परलोक नहीं है तो भी व्यक्ति का कोई नुकसान होगा। वर्तमान जीवन में आत्म संतोष मिल सकेगा। और यह मान लिया जाए कि पुनर्जन्म है और अच्छे काम किए हो तो आगे भी अच्छी गति मिल सकती है। अच्छे काम करने से दोनों हाथों में लड्डू मिल सकते हैं। "तुम पुण्य कार्य करो मत भले ही, किंतु करो मत पाप, पुण्य के फल को पा लोगे। मत रटो राम का नाम भले ही, किन्तु करो शुभ काम, राम के बल को पा लोगे।"

मानव जीवन महत्वपूर्ण जीवन है जो हमें प्राप्त है, इसमें शुभ काम करो। धर्म के मार्ग पर चलो, पर पीड़ा मत करो। आध्यात्मिक परोपकार करना पुण्य का कार्य है। दूसरों को दुःख देना पाप है।

किसी का भला तो न कर सकें तो किसी का बुरा तो न करें। सन्मार्ग पर चलना हमारी आत्मा के लिए हितकर हो सकता है।

डोंबिवली चातुर्मास संपन्न कर गुरु सन्निधि में पहुंचे उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी ने हृदयेश्वर के समक्ष अपने हृदयोद्‌घार व्यक्त किए।

पूज्यवर के स्वागत में प्रकाश पितलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। समस्त पाटीदार समाज के उपप्रमुख बाबूभाई ने अपने विचार रखे। बहुमंडल ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

# दो दिवसीय प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन

**पुणे (महाराष्ट्र)।**

प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अवसर पर, प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में डॉ. मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में एवं मुनि हिमकुमार जी, अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक ज्योतिंद्र भाई जवेरी के मार्गदर्शन में दो दिवसीय प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा द्वारा तेरापंथ भवन पुणे में किया गया। कार्यशाला के पहले दिन मुनि आलोक कुमार जी ने मंगलाचरण कर सभी को उपसंपदा करवाई। स्नेहा नाहटा द्वारा योगाभ्यास कराया गया। मुनि हिमकुमार जी ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित प्रेक्षा गीत का संगान किया और प्रेक्षा का अर्थ बताते हुए उसके महत्व को समझाया।

मुनिश्री ने कहा कि प्रेक्षा ध्यान द्वारा संकल्प शक्ति मजबूत होती है, संवेग पर नियंत्रण रहता है और मन शांत व स्वभाव शीतल रहता है।

मुनि आलोक कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान के 5 सूत्र - भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार, मित भाषण पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने प्राण ऊर्जा, प्राण शक्ति और प्राणायाम के बारे में विस्तार से बताया। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला के मुख्य अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक ज्योतिंद्र भाई जवेरी ने दो दिवसीय कार्यशाला में प्रेक्षाध्यान के अर्थ को समझाते हुए अनेक प्रयोग कराए जैसे :- कोयोत्सर्ग , दीर्घ श्वास प्रेक्षा, ज्योति केंद्र प्रेक्षा, गमन योग आदि। आपने कार्यशाला के दौरान जीवन जीने की कला, प्रतिदिन दिनचर्या, भोजन का प्रारुप, व्यायाम आदि के ऊपर सविस्तार से जानकारी दी और सहभागियों द्वारा पूछे गए हर सवाल का कुशलता से जवाब देकर सबका मागदर्शन किया। दो दिवसीय कार्यशाला में कुल 75 सहभागियों ने भाग लिया और इस कार्यशाला को सफल बनाया।

समापन के अवसर पर सभा अध्यक्ष महावीर कटारिया एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीयों ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं भाई ज्योतिंद्र के प्रति आभार प्रकट किया।

कार्यशाला को सफल बनाने में तेरापंथ सभा के साथ समाज की सभी संस्थाएं- तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति के सदस्यो का पूर्ण श्रम रहा। कार्यशाला के आयोजन में प्रेक्षा ट्रेनर रतन सेठिया ने महत्वपूर्ण श्रम किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 दिसम्बर- 15 दिसम्बर, 2024

# ज्ञान के साथ आचरण का भी है महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

**पर्वत पाटिया।**
**25 नवम्बर, 2024**

भैक्षवगण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ सिटी लाइट स्थित तेरापंथ भवन से विहार कर पर्वत पाटिया पधारे। विशाल जनमेदिनी को प्रतिबोध प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो जाना, सम्यक्त्व का प्राप्त हो जाना एक बड़ी उपलब्धि होती है।

ज्ञान अध्यात्म के सन्दर्भ का भी होता है तो अन्य ज्ञान भी होता है। विद्या संस्थान लौकिक ज्ञान से जुड़े होते हैं। एक चिन्तन है कि इस जीवन तक ही शरीर है। दूसरा चिन्तन यह भी है कि इस जीवन से पहले भी मेरा अस्तित्व था और इस जीवन के बाद भी मेरा अस्तित्व रहेगा। मैं आत्मा हूं, मैं शरीर नहीं हूं। शास्त्रीय मंतव्य में नौ तत्वों के ज्ञान को सम्यक ज्ञान कह सकते हैं। ज्ञान का अपना महत्व है तो साथ में दया-आचरण भी होना चाहिए।

आज मिगसर कृष्णा दशमी का दिन है जो भगवान महावीर के दीक्षा कल्याणक के रूप में प्रतिष्ठित है। एक महापुरूष ने आज के दिन संतता को स्वीकार किया था। आज के दिन वर्धमान ने यह संकल्प लिया था कि अब से सारा पाप कर्म मेरे लिए अकरणीय रहेगा। हमारी दुनिया में त्याग का बड़ा महत्व है। सम्यक्त्व युक्त चारित्र के सामने संसार के बढ़िया भौतिक हीरे भी कुछ नहीं है।

साधु के पांच महाव्रत अमूल्य हीरे हैं। ये हीरे आत्मा का कल्याण कराने वाले हैं। आज के दिन सन् 2013 में तो बीदासर में लगभग 43 आत्माएं चारित्रवान बनी थी। गुरूदेव तुलसी ने भी आज के दिन दीक्षा ली थी, और भी अनेक चारित्रात्माओं की आज के दिन दीक्षा हुई है। सामायिक अमूल्य होती है तो चारित्र भी अमूल्य है, उसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता।

एक मोह का मार्ग है, दूसरा मोक्ष का मार्ग है। भगवान महावीर भी चरम शरीरी थे, उन्होंने सर्व दुःख मुक्ति को प्राप्त किया था। उनके साधना काल में कम से कम बेले की तपस्या हुई थी। युवावस्था में सांसारिक सुखों को त्यागना बड़ी बात है। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में अनेक बातों में समानताएं हैं। यह भी एक योग है। भगवान के दीक्षा दिवस से हमें संयम को पालने की प्रेरणा मिले यह काम्य है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष गौतम ढेलड़िया ने वक्तव्य एवं महिला मंडल ने गीतिका से अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

## आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।